**SANSKRUTI INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL**

***Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj***

…………………………………………………………………………………

# fo|kfFk;ksa ds lokZxh.k fodkl dk lk/ku & lefpr funsZ'ku ,oa ijke'kZ

Mk- fxj/kkjh yky 'kekZ

सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान)

*निर्देशन, शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित निर्देशन अत्यन्त आवश्यक है। आज भौतिकवादी युग में औद्योगिक क्रांति तथा संयुक्त परिवार के विघटन के कारण मानव अधिक तनाव युक्त जीवन व्यतीत कर रहा है। उसको जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनुभवी व्यक्ति की सहायता महसूस होती है। अनुभवी व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन कहलाती है। किन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अपने विद्यार्थियों को समुचित निर्देशन एवं परामर्श सेवा उपलब्ध नहीं करवा पाए हैं, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे विद्यार्थियों के विकास पर पड़ रहा है और वे अपनी क्षमताओं, शक्तियों का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। फलस्वरूप उनका जो लाभ, राष्ट्र को तथा समाज को मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल पा रहा है। इस दिशा में चिन्तन के साथ सकारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।*

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसको समाज का उपयोगी, सक्रिय एवं उत्पादक सदस्य बनाना शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। निर्देशन, शिक्षा का अभिन्न अंग है तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समुचित निर्देशन अत्यन्त आवश्यक है। निर्देशन की आवश्यकता, व्यक्ति को हमेशा से रही है, किन्तु पुरातन समय में संयुक्त परिवार प्रथा तथा जीवन का स्वरूप सहज होने से, व्यक्ति को निर्देशन परिवार के सदस्यों से ही प्राप्त हो जाता था, किन्तु वर्तमान में परिस्थितियां अत्यधिक परिवर्तित हो गई हैं। आज भौतिकवादी युग में औद्योगिक क्रांति तथा संयुक्त परिवार के विघटन के कारण मानव अधिक तनाव युक्त जीवन व्यतीत कर रहा है। उसको जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनुभवी व्यक्ति की सहायता महसूस होती है। अनुभवी व्यक्ति द्वारा दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन कहलाती है।

VDlyj ने निर्देशन को परिभाषित करते हुए कहा है–''निर्देशन प्रत्येक छात्र को इस प्रकार सहायता देना हैकि वह अपनी क्षमताओं एवं शक्तियों का ज्ञान प्राप्त कर सके, इनका विकास करते हुए, इनका सम्बन्ध जीवन मूल्यों तथा जीवन उद्देश्यों से स्थापित कर सके तथा अंत में छात्र को इस योग्य बना सके कि वह अपना पथ प्रदर्शन स्वयं कर सके। इस प्रकार व्यक्ति को स्वयं तथा समाज के उपयोग के लिए स्वयं की क्षमताओं के अधिकतम विकास के प्रयोजन से निरन्तर दी जाने वाली सहायता ही निर्देशन है।

## fun'ku dh vko';drk

वर्तमान में एकल परिवार प्रणाली के प्रचलन तथा अत्यधिक भौतिकवादी मनोवृत्ति के कारण प्रायः हम देखते हैं कि माता–पिता का पूरा समय सिर्फ पैसों के पीछे भागते ही निकल जाता है तथा इस कारण वे बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। फलस्वरूप बच्चे घर में निरन्तर अकेलापन महसूस करते हैं। वे अपनी जिज्ञासाओं को मन में ही रखकर रह जाते हैं तथा समय का दुरुपयोग टी.वी. देखने या फिर सोशियल मीडिया पर करते हैं जिससे कम उम्र में ही भटकाव की ओर जाने लगते हैं। इससे उनका शारीरिक तथा मानसिक विकास तो अवरूद्ध होता ही है, साथ ही वे अनैतिक कार्य तक करने लग जाते हैं, जिसका दुष्परिणाम न केवल उनको बल्कि उनके माता–पिता को भी भुगतना पड़ता है।

विद्यालयों में भी हमारे देश में अभी तक समुचित निर्देशन की व्यवस्था नहीं है जिससे विद्यार्थी अपना समुचित विकास नहीं कर पा रहे हैं। यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि यदि किसी बच्चे को सही समय पर सही मार्गदर्शन मिलता रहे तो उसे जीवन में अवश्य सफलता मिलती है। यही कारण है कि आज विद्यार्थियों को निर्देशन की आवश्यकता अनुभव की जा रही है तथा इस पर अधिक बल दिया जाने लगा है।

'माध्यमिक शिक्षा आयोग' ने अपने सुझावों में कहा है कि–

- शिक्षा निर्देशन में, शिक्षा अधिकारियों के कार्यों पर अधिक ध्यान दिया जाए।
- सभी शिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षित निर्देशन कार्यककर्त्ता एवं कैरियर मास्टर्स की नियुक्ति की जाए।
- केन्द्र द्वारा समस्त राज्यों में प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाएं, जहां निर्देशनकर्त्ता उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त कर सके।।

1964 में कोठारी आयोग ने शिक्षा के समस्त अंगों पर विचार करने के साथ–साथ निर्देशन एवं परामर्श की तत्कालिक स्थिति का अध्ययन किया तथा सुधारार्थ निम्न संस्तुतियां दी–

- निर्देशन को शिक्षा का अभिन्न अंग मानना चाहिये।
- निर्देशन सेवा सभी विद्यार्थियों के लिए होनी चाहिये तथा यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया हो।
- निर्देशन प्राथमिक कक्षा की सबसे छोटी इकाई से प्रारम्भ करना चाहिये।
- यथा संभव शिक्षकों हेतु 'लघु सेवा पाठ्यक्रम' की व्यवस्था की जाए।

किन्तु यह अत्यन्त खेद का विषय है कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी हम अपने विद्यार्थियों को समुचित निर्देशन एवं परामर्श सेवा उपलब्ध नहीं करवा पाए हैं, जिसका

प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे विद्यार्थियों के विकास पर पड़ रहा है और वे अपनी क्षमताओं, शक्तियों का सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। फलस्वरूप उनका जो लाभ, राष्ट्र को तथा समाज को मिलना चाहिये था, वह नहीं मिल पा रहा है। इस दिशा में चिन्तन के साथ सकारात्मक प्रयासों की आवश्यकता है।

## fun'ku dh mi;kfxrk

वर्तमान भागती–दौड़ती जिन्दगी में व्यक्ति को प्रत्येक क्षेत्र में निर्देशन की अत्यधिक उपयोगिता है। निर्देशन की उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं में समझा जा सकता है–

1. mi;Dr ikB;Øe dk p;u& कक्षा 10वीं के बाद विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों के सामने उपयुक्त पाठ्यक्रम का चुनाव प्रमुख समस्या होती है, जिसका सीधा प्रभाव बच्चों के भविष्य पर पड़ता है। अतः निर्देशन के माध्यम से बच्चों की रूचि, योग्यता एवं क्षमतानुसार पाठ्यक्रम का चयन में सहायता की जाती है।

2. vi;; o vojks/ku dk lek/kku& हमारे देश में आज भी अनेक बच्चे कुछ कारणों से बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं, जिसे अपव्यय कहते हैं तथा अनेक बच्चे एक ही कक्षा में कई बार फेल होते रहते हैं, जिसे अवरोधन कहा जाता है। यह एक गंभीर समस्या है।

निर्देशन के माध्यम से इन समस्याओं का निदान कर, इनका समुचित उपचार किया जा सकता है।

3. mi;Dr 0;olk; dk p;u& प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक व्यवसाय को नहीं कर सकता है। गलत व्यवसाय का चयन व्यक्ति के विकास में बड़ा अवरोधक बन जाता है जिसका प्रभाव, व्यक्ति तथा उसके परिवार तथा समाज पर नकारात्मक पड़ता है। व्यावसायिक निर्देशन के माध्यम से विद्यार्थियों को उनकी योग्यता एवं क्षमतानुसार व्यवसाय चयन में सहायता की जाती है।

4. lek;kstu e lgk;d& प्रायः विद्यार्थी एक कक्षा से दूसरी कक्षा, एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय या व्यावसायिक स्थल या फिर परिवार अथवा समाज में ठीक से स्वयं को समायोजित नहीं कर पाते, जिसका प्रभाव उनके व्यवहार तथा व्यक्तित्व में प्रत्यक्षतः दृष्टिगोचर होता है। इससे न केवल वे तनाव में रहते हैं बल्कि उनकी प्रतिष्ठा भी धूमिल होने लगती है। निर्देशन प्रदाता, ऐसे व्यक्तियों की सहायता करते हैं। वे कारणों को जानकर, व्यक्ति की समायोजन में मदद करते हैं।

5. le; dk lnqi;ksx& प्रायः विद्यार्थी वर्तमान में अधिकांश समय सोशियल मीडिया पर व्यतीत करने लगे हैं, जिससे अनेक दुष्परिणाम हम नित्य प्रति अखबारों में तथा न्यूज चैनलों पर पढ़ते तथा सुनते हैं। इससे विद्यार्थियों का न केवल कीमती समय तथा पैसा नष्ट हो रहा है, बल्कि वे अनैतिक कार्यों में लिप्त होने लगे हैं। अनेक लड़कियां दुर्घटनाओं की शिकार हो रही हैं। ऐसे में बच्चों की सही काउन्सिलिंग ही उन्हें समय का सदुपयोग सिखा सकती है। यहां माता–पिता, शिक्षक तथा परामर्शक तीनों के सहयोग की आवश्यकता होती है।

6. 0;fDrxr leL;kvksa dk lek/kku& शैक्षिक तथा व्यावसायिक समस्याओं के साथ अनेक व्यक्तिगत समस्याएं भी विद्यार्थियों के समक्ष होती है, जिन्हें वे प्रायः माता–पिता या शिक्षकों को भी नहीं बता पाते तथा तनाव में रहने लगते हैं। जैसे– विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, सैक्स समस्याएं, प्यार में धोखा, परिवार में उपेक्षा, पैसों की कमी, विवाह को लेकर चिन्ता आदि। इन समस्याओं के समाधान में भी व्यक्तिगत निर्देशन प्रदाता अत्यधिक सहायक होता है।

## funs'ku ds lq/kkjkFkZ lq>ko

यदि हम अपने बच्चों/विद्यार्थियों का संतुलित विकास चाहते हैं तथा चाहते हैं कि वे राष्ट्र के सुयोग्य नागरिक बनकर सुख–सुविधापूर्वक जीवन–यापन कर सकें तो हमें उनको पर्याप्त निर्देशन व परामर्श की व्यवस्था करनी ही होगी। इस दिशा में कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–

- केन्द्र तथा राज्य सरकारों को प्रत्येक विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में निर्देशन कार्यालय की स्थापना तथा प्रशिक्षित निर्देशकों की नियुक्ति करनी होगी।
- प्रत्येक शिक्षक को यह दायित्व लेना होगा कि वह अपने ज्ञान को निरन्तर अद्यतन करें तथा विद्यार्थियों को यथोचति निर्देशन प्रदान करें।
- बच्चों के प्रति सर्वाधिक जिम्मेदारी माता–पिता की होती है। उन्हें यह समझना होगा कि पैसा ही जिन्दगी में सबकुछ नहीं है जिनके लिए पैसा कमा रहे हैं अगर वो ही राह भटक गये तो फिर वो पैसा किसी काम नहीं आएगा। अर्थात् माता–पिता को, बच्चों को पर्याप्त समय देना चाहिये। उनकी समस्याएं प्यार से सुननी चाहिये तथा समुचित समाधान करना चाहिये।
- माता–पिता तथा शिक्षक, अपने आचरण एवं व्यवहार द्वारा भी सहज ही बच्चों को निर्देशन प्रदान कर सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि विद्यार्थी जीवन में तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निर्देशन अत्यधिक आवश्यक है। निर्देशन के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपनी क्षमताओं एवं शक्तियों को बल्कि अपनी कमियों को जान लेता है तथा तदनुसार ही अपने भविष्य के निर्णय लेता है और अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं करने में सक्षम हो जाता है। सही समय पर समुचित निर्देशन का लाभ न केवल व्यक्ति को, बल्कि उसके परिवार, समाज तथा राष्ट्र को भी मिलता है। अतः हमें इस दिशा में अधिक प्रयासों की आवश्यकता है ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को समुचित निर्देशन उपलब्ध हो सकें और यदि हम सब मिलजुलकर इस दिशा में प्रयास करेंगे तो ऐसा अवश्य हो सकेगा।

## I nHk xFk I ph


1. सक्सैना, राधारानी : रानी, इंदिरा (2016), शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. सिंह, रामपाल : उपाध्याय, राधावल्लभ (2007), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
3. राय, अमरनाथ : अस्थाना, मधु (2003), निर्देशन एवं परामर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली
4. जायसवाल, सीताराम (2000), शिक्षा में निर्देशन और परामर्श, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. Madhukar, Indira (2003), Guidance and Counselling, Authors Press, Delhi
6. Sharma, Shashi Prabha (2005), Career Guidance and Couselling, Kanishka Publishers, New Delhi.
7. Thakar, Kamendu Ramesh Chandra (2012), Guidance and Counselling in Education, Mark Publishers, Jaipur